अध्याय 3

अय्यूब का विलाप

रॉबर्ट एल. आल्डन का मत था कि अध्याय 3 बाइबल के सबसे निराशाजनक अध्यायों में से एक है।[1] उन सब को जिन्होंने पहले दो अध्याय पढ़े हैं अय्यूब के विलाप के सदमे के महत्व की समझ आती है। उसके विलाप ने तीनों मित्रों को भी सदमा पहुंचाया था, जैसा कि उनकी बातचीत से पता चलता है। हमें यह याद रखना आवश्यक है कि अय्यूब के पास वह प्रकाशन उपलब्ध नहीं था, जो आज हमारे पास है। इसके होने के बावजूद हम फिर भी इस संसार में पाए जाने वाले दु:ख और पीड़ा से विचलित होते हैं।

बिल्कुल अलग तरीके से दु:ख और पीड़ा पर विचार करना अलग बात है, परन्तु जैसा अय्यूब के साथ हुआ इतने अचानक से और ज़ोरदार तरीके से इसे सहना अलग बात है। वेन जेक सन ने सही कहा है, ''भूमिका की चढ़ाव वाली आत्मिक चोटियों (अध्याय 1, 2) और उपसंहार (42:7 से) के बीच निराशा और ज़ोरदार सवालों की एक तूफानी वादी है।''[2] अब हम इसी ''वादी'' में प्रवेश करते हैं।

''मैं जन्मा ही क्यों?'' (3:1-10)

1इसके बाद अय्यूब मुंह खोलकर अपने जन्म-दिवस को धिक्कारने 2और कहने लगा,
3''वह दिन जल जाए जिसमें मैं उत्पन्न हुआ, और वह रात भी जिसमें कहा गया, 'बेटे का
गर्भ रहा।' 4वह दिन अन्धियारा हो जाए! ऊपर से ईश्वर उसकी सुधि न ले, और न उसमें
प्रकाश हो। 5अन्धकार और मृत्यु की छाया उस पर रहे। बादल उस पर छाए रहें; और दिन
को अन्धेरा कर देनेवाली चीजें उसे डराएँ। 6घोर अन्धकार उस रात को पकड़े; वर्ष के दिनों
के बीच वह आनन्द न करने पाए, और न महीनों में उसकी गिनती की जाए। 7सुनो, वह
रात बांझ हो जाए; उसमें गाने का शब्द न सुन पड़े। 8जो लोग किसी दिन को धिक्कारते
हैं और लिव्यातान को छेड़ने में निपुण हैं, उसे धिक्कारें। 9उसकी संध्या के तारे प्रकाश न
दें; वह उजियाले की बाट जोहे पर वह उसे न मिले, वह भोर की पलकों को भी देखने न
पाए; 10क्योंकि उसने मेरी माता की कोख को बन्द न किया और कष्ट को मेरी दृष्टि से
न छिपाया।''

आयत 1. इसके बाद अय्यूब ... अपने जन्म-दिवस को धिक्कारने लगा। ''इसके बाद'' अध्याय 1 और 2 में दर्ज घटनाओं को कहा गया है। वचन वस्तुत: कहता है, ''अय्यूब ने अपने दिन को शाप दिया।'' यह स्पष्ट है कि यह हवाला उसके जन्म के दिन से सम्बन्धित है।

आयतें 2, 3. और कहने लगा, ''वह दिन जल जाए जिसमें मैं उत्पन्न हुआ।'' पूरे पद्य के व्याकरणीय ढांचे (3:3-10) में क्रिया के ''आज्ञार्थक'' या ''इच्छा रूप'' प्रयोग किए गए हैं। अंग्रेज़ी भाषा में कई वाक्यों का आरम्भ कई ''let'' या ''may'' के साथ होता है। जो कि

‘‘इस प्रकार के अन्य पुरुष आदेशसूचक को कहने का अंग्रेज़ी ढंग’’[3] है।

‘‘और वह रात भी जिसमें कहा गया, ‘बेटे का गर्भ रहा।’’’ ‘‘बेटा’’ (*geber, गेबेर*) या ‘‘पुरुष बालक’’ (KJV) को आम तौर पर ‘‘पुरुष’’ अनुवाद किया जाता है। यह एक पसंदीदा शब्द है जो पुस्तक में पन्द्रह बार मिलता है।[4] यह इब्रानी शब्द सामर्थी पुरुष के लिए इस्तेमाल होता है, विशेषकर बालक या स्त्री की तुलना में।

आयत 4. अय्यूब की पुस्तक में **अंधियारा** और **प्रकाश** शब्द बार-बार आते हैं। ‘‘अंधियारा’’ शब्द NASB में इक्कतीस बार इस्तेमाल हुआ है, जबकि ‘‘प्रकाश’’ अठाइस बार। (उदाहरण के लिए देखें 10:21, 22; 12:25; 17:12, 13; 18:18; 26:10; 30:26; 38:19.)

आयत 5. मृत्यु की छाया (*tsalmaweth, त्साल्मावेथ*) शब्द जितनी बार पुराने नियम की सब पुस्तकों को मिलाकर इस्तेमाल हुआ है, उससे अधिक बार यह अय्यूब की पुस्तक में हुआ है। इसका अनुवाद ‘‘घोर अंधकार’’ (10:21, 22; 28:3; 34:22), ‘‘घोर अंधकार’’ (12:22; 16:16; 38:17), ‘‘घोर अंधकार’’ (24:17) किया गया है। भजन संहिता 23:4 में इसका अनुवाद ‘‘घोर अंधकार से भरी हुई तराई’’ किया गया है। *Tsalmaweth* (*साल्मावेथ*) जो ‘‘छाया’’ (*tsel, त्सेल*) और ‘‘मृत्यु’’ (*maweth, मावेथ*) को मिलाता हुआ सबसे जटिल शब्द लगता है।

और दिन को अन्धेरा कर देनेवाली चीजें उसे डराएं। ‘‘डराएं’’ शब्द अय्यूब की पुस्तक में और जगह पर आत्माओं के संसार का सामना करने के अनुभव के भय की भावना को दर्शाता है (7:14; 9:34; 13:11, 21)।

आयत 6. ‘‘घोर अन्धकार उस रात को पकड़े।’’ ‘‘अंधकार’’ (*’opel, ओपेल*) वही इब्रानी शब्द नहीं जिसका इस्तेमाल आयतें 4 और 5 में हुआ है। यह अंधकार आत्मिक अंधकार अर्थात अपराध जगत का अंधकार है। पुराने नियम के इस शब्द के नौ बार के इस्तेमाल से छह बार अय्यूब की पुस्तक में ही मिलता है (3:6; 10:22 [दो बार]; 23:17; 28:3; 30:26)।

आयत 7. बांझ होने का अर्थ नि:संतान होना था। इसलिए **वह रात** बच्चे के जन्म पर **गाने का शब्द न सुन पड़े**।

आयत 8. ‘‘जो लोग किसी दिन को धिक्कारते हैं और लिव्यातान को छेड़ने में निपुण हैं, उसे धिक्कारें।’’ ‘‘लिव्यातान’’ पुराने नियम की पांच आयतों में छह बार आता है (3:8; 41:1 [40:25]; भजन संहिता 74:14; 104:26; यशायाह 27:1)। कोहलर ऐंड बामगाटनर के लैक्सिकन में ये अनुवाद दिए गए हैं: ‘‘ड्रैगन’’ (3:8); ‘‘मगरमच्छ’’ (41:1); और ‘‘व्हेल’’ (भजन संहिता 104:26)।[5] अधिकतर आधुनिक अनुवादों में इब्रानी शब्द (*liwyathan, लिव्याथान*) का लिप्यंत्रण ‘‘लिव्यातान’’ ही किया गया है (NIV; NEB; NJPSV; NRSV; JB)। इस संदर्भ में यह मिथक प्राणी लगता है जिसे धार्मिक नीम-हकीम उकसाने की शक्ति होने का दावा करने के लिए इस्तेमाल करते थे।[6] कविता में मिथकों का इस्तेमाल न तो उनमें विश्वास दिलाने के लिए और न अय्यूब के एकेश्वरवादी होने के विरुद्ध संकेत देने के लिए है।

आयत 9. अय्यूब इस इच्छा से कि उसके जन्म की रात का सारा **प्रकाश** उसमें से निकल जाए, उसे श्राप देता रहा। **उसकी संध्या के तारे** और **भोर** (यानी सूर्योदय से सूर्यास्त) का उल्लेख करके उसने उस पूरी शाम को शामिल कर लिया।

आयत 10. अय्यूब के जन्म की रात को **कष्ट** की सूचक के रूप में दिखाया गया है ''कष्ट'' (*'amal, अमाल*) का अनुवाद ''कर्मचारी,'' ''आवश्यकता,'' ''सोच,'' या ''हानि'' हो सकता है।[7] अय्यूब की पुस्तक में आम तौर पर इस शब्द का अर्थ ''क्लेश'' के रूप में हुआ है अय्यूब (4:8; 5:6, 7; 7:3; 11:16)।

''पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्यों न छूटा?'' (3:11-19)

11''मैं गर्भ ही में क्यों न मर गया? पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्यों न छूटा? 12मैं घुटनों पर क्यों लिया गया? मैं छातियों को क्यों पीने पाया? 13ऐसा न होता तो मैं चुपचाप पड़ा रहता, मैं सोता रहता और विश्राम करता, 14और मैं पृथ्वी के उन राजाओं और मन्त्रियों के साथ होता जिन्होंने अपने लिये सुनसान स्थान बनवा लिए, 15या मैं उन राजकुमारों के साथ होता जिनके पास सोना था, जिन्होंने अपने घरों को चांदी से भर लिया था; 16या मैं असमय गिरे हुए गर्भ के समान हुआ होता, या ऐसे बच्चों के समान होता जिन्होंने उजियाले को कभी देखा ही न हो। 17उस दशा में दुष्ट लोग फिर दुःख नहीं देते, और थके मांदे विश्राम पाते हैं। 18उसमें बन्दी एक संग सुख से रहते हैं; और परिश्रम करानेवाले का शब्द नहीं सुनते। 19उसमें छोटे बड़े सब रहते हैं, और दास अपने स्वामी से स्वतन्त्र रहता है।''

इस पद्य में अय्यूब ने चाहा कि काश वह मर गया होता। परिणाम वही है जो पिछले पद्य में था, परन्तु यहां पर उसका इरादा कुछ इस प्रकार का है जैसे वह मरने को तरस रहा हो।

आयतें 11, 12. अय्यूब ने चाहा कि काश **पेट से निकलते ही** उसका **प्राण निकल जाता। घुटनों** सम्भवतया उसकी माता के घुटनों को कहा गया है, चाहे बच्चे को जन्म के समय ''स्वीकृति और जायज ठहराने के चिह्न के रूप में उसके पिता के घुटनों पर रखा जाता था'' (देखें उत्पत्ति 48:5, 12; 50:23)।[8]

आयतें 13-19. अय्यूब ने मृत्यु को जीवन के कष्टों से छुटकारे के रूप में देखा। उसमें वह **सोता रहता और विश्राम करता**। उसने इसे बड़े समकारी के रूप में भी देखा जो **राजाओं और मन्त्रियों** के साथ भी होता है और **बंदी** और **दास** भी होता है। बड़े-बड़े लोगों ने सुनसान स्थान को फिर से बनाकर **अपने घरों को चांदी से भर लिया था**। फिर भी वे उनमें से अपने साथ कोई दौलत न ले जा सके! अय्यूब चाहता था कि काश वह **असमय गिरे हुए गर्भ के समान हुआ होता, या ऐसे बच्चों के समान होता जिन्होंने उजियाले को कभी देखा ही न हो** (3:16)।

''उस दशा में दुष्ट लोग फिर दुःख नहीं देते, और थके मांदे विश्राम पाते हैं'' (3:17)। अगले कथनों के साथ साथ इस कथन में भी ऐसे लोगों के वर्ग शामिल हैं जो अय्यूब के अनुमान में जीवित रहने से मरे हुए होते तो बेहतर होते: ''दुष्ट,'' ''थके मांदे,'' ''बंदी,'' ''परिश्रम करवाने वाले,'' ''दास।'' उनके लिए जिन्हें दुर्बल करने वाले रोग हैं, निरन्तर पीड़ा से परेशान हैं, जीने से मरना बेहतर लगता है। प्रेरित पौलुस ने भी कहा है, ''क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है। ... क्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूं; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूं, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है। परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण और भी आवश्यक है'' (फिलिप्पियों 1:21-24)।

''मुझे दु:ख क्यों सहने पड़ रहे हैं?'' (3:20–26)

[20]''दुखियों को उजियाला, और उदास मनवालों को जीवन क्यों दिया जाता है? [21]वे मृत्यु की बाट जोहते हैं पर वह आती नहीं; और गड़े हुए धन से अधिक उसकी खोज करते हैं; [22]वे कब्र को पहुंचकर आनन्दित और अत्यन्त मगन होते हैं। [23]उजियाला उस पुरुष को क्यों मिलता है जिसका मार्ग छिपा है, जिसके चारों ओर ईश्वर ने घेरा बाँध दिया है? [24]मुझे रोटी खाने के बदले लम्बी लम्बी साँसें आती हैं, और मेरा विलाप धारा के समान बहता रहता है। [25]क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं डरता हूँ, वही मुझ पर आ पड़ती है, और जिस बात से मैं भय खाता हूँ वही मुझ पर आ जाती है। [26]मुझे न तो चैन, न शान्ति, न विश्राम मिलता है; परन्तु दु:ख ही दु:ख आता है।''

आयतें 20–23. व्याकरण के ढंग से ये चार आयतें एक ही प्रश्न हैं। ''क्यों?'' का प्रश्न अकथनीय दु:ख, मन की कड़वाहट, मुसीबत, त्रासदी झेल रहे किसी भी व्यक्ति के होठों पर होता है?

''**जिसका मार्ग छिपा है।**'' ''मार्ग'' (*derek, डेरेक*) ''जीवन पथ'' या किसी की नियति के लिए कहा गया है। विपत्तियां जिनसे अय्यूब के ऊपर कहर टूटा था, उनके कारण अय्यूब को लगने लगा कि उसके जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है। शैतान ने परमेश्वर पर अय्यूब के ऊपर रक्षा का बाड़ा लगाने का आरोप लगाया था (1:10), परन्तु यहां पर अय्यूब को लगा कि उसके दु:खों ने उस पर **घेरा बांध दिया है**। जॉन ई. हार्टले ने इसकी व्याख्या की है, ''अय्यूब कल्पना करता है कि परमेश्वर ने उस पर बाड़ा बांध रखा है ताकि वह अपनी दुर्दशा से बचने का कोई रास्ता न निकाल सके। ... अय्यूब को ऐसा लगता है कि परमेश्वर ने उसे बेचैनी में बंद कर दिया है और कुंजी फैंक दी है।''[9]

आयतें 24–26. इन अंतिम आयतों में उस अत्यधिक पीड़ा का सार मिलता है, जो अय्यूब ने सही थी। वह अपनी **रोटी** खाने को तरसता था। उसे भूख नहीं लगती थी। उसका विलाप **धारा के समान बहता रहता है**। **जिस डरावनी बात से मैं डरता हूँ, वही मुझ पर आ पड़ती** थी। उसे अपनी कष्टदायी पीड़ा से कोई राहत नहीं मिली थी।

जैक्सन ने अय्यूब की बातों पर यह सावधानी बरतने को कहा है:

> हम बड़े ध्यान से देखते हैं कि इस अध्याय में अय्यूब की निराशा भरी बातें *परमेश्वर की प्रेरणा से नहीं है*। बेशक अय्यूब की पुस्तक परमेश्वर की *प्रेरणा से लिखी* गई पुस्तक है जिसमें अय्यूब और उसके मित्र की सोच और उनकी कही बातें हैं। परन्तु जो कुछ उनकी सोच और बातें हैं वे परमेश्वर की ओर से नहीं हैं, और इसलिए वे सच्चाई के साथ मेल खाती हो भी सकती हैं और नहीं भी (और अधिकतर ये मेल नहीं खातीं)।[10]

प्रासंगिकता

''आपको एक मित्र मिला है'' (अध्याय 2; 3)

एक बार एक नन्हें बालक से उसके बाइबल क्लास टीचर द्वारा यह पूछा गया, ''आपकी

सबसे कीमती चीज़ आपके पास क्या है ?'' उसने बिना किसी हिचकिचाहट से कहा, ''मेरा मित्र।'' इतना नज़दीकी दोस्त होना बहुत बड़ी आशीष है। थॉमस फुलर ने एक बार कहा, ''बिना मित्र के कोई प्रसन्न नहीं हो सकता, जब तक कोई दु:खी न हो, तब तक उसे अपने मित्र के महत्व का पता नहीं चल सकता है।''[11] मारलीन डियट्रिच ने कहा, ''बड़ी बात यह है कि आप सुबह सुबह 4:00 बजे अपने मित्रों को कहीं कॉल कर सकते हैं।''[12]

अध्याय 2 के अंत में अय्यूब बड़े ही भावनात्मक और शारीरिक कष्ट में था। उसकी ज़मीन, जायदाद, सम्पत्ति और बच्चे छिन चुके थे। उसके शरीर पर इतनी बुरी तरह से सूजन थी कि उसके मित्र उसे पहचान नहीं पाए। अय्यूब दु:खी था परन्तु अभी भी उसका विश्वास था और उसके तीनों मित्र थे और ये दोनों बेशकीमती थे। अय्यूब के तीनों मित्रों ने जब उसकी परेशानियों के बारे में सुना तो वे उसे तसल्ली देने के लिए आए। (तसल्ली इस पुस्तक का दूसरे क्रम का विषय है।) हम इन मित्रों से क्या सीख सकते हैं ?

जब आपको आवश्यकता पड़ती है तो सच्चे मित्र आपकी सहायता के लिए आते हैं। जब उन्होंने अय्यूब की परेशानियों के बारे में सुना तो वे आराम से बैठकर यह नहीं कह सके ''उम्मीद है कि वह ठीक हो जाएगा।'' वे इकट्ठे हुए और फिर ''सलाह करके'' (2:11; NIV), उसे देखने और उसके पास रहने के लिए गए। डॉक्टर आल्बर्ट शवेज़र की कहानी बताई जाती है जब वह पच्चासी साल का था और अफ्रीका में रहता था, उसने एक अफ्रीकी महिला को लकड़ियां अपने सिर पर उठाए हुए भारी बोझ लेकर पहाड़ी पर चढ़ने की कोशिश करते हुए देखा। गर्मी भरे इस दिन में डॉक्टर श्वेजर अपने समूह को छोड़कर पहाड़ी की उस ढलान के पार चला गया, उस महिला का बोझा उठाते हुए वह उसके साथ पहाड़ी पर चढ़ा। उसके समूह के किसी व्यक्ति ने कहा कि इस उम्र में उसे यह नहीं करना चाहिए था। उसने कहा, ''ऐसा बोझ किसी को भी अकेले नहीं उठाना चाहिए।''[13]

असली दोस्त बिना कुछ कहे एक दूसरे को बड़ी तसल्ली दे सकते हैं। हमारा एक प्रिय भजन इस प्रकार से है:

> कितना मधुर, कितना स्वर्गीय नज़ारा है,
> जब वे जो प्रभु से प्रेम रखते हैं
> एक दूसरे की शांति में आनन्द पाते हैं,
> और इस प्रकार से उसके वचन को पूरा करते हैं।
> जब हर कोई अपने भाई की आह को महसूस करता,
> और कुछ उसके साथ सहन करता है;
> और दु:ख देखते ही देखते भाग जाता है,
> और आनन्द हर दिल में भर जाता है।[14]

अय्यूब 2:11-13 कहता है कि अय्यूब के मित्र ''उसके संग विलाप'' करने ''और उसको शान्ति'' देने आए। ''तब वे सात दिन और सात रात उसके संग भूमि पर बैठे रहे, परन्तु उसका दु:ख बहुत ही बड़ा जान कर किसी ने उससे एक भी बात न कही।'' 2 कुरिन्थियों 1:4 में मसीही लोगों को दूसरों की परेशानियों में उन्हें तसल्ली देने को कहा गया है। विश्वासियों से दूसरों को

आज के लिए सामर्थ और भविष्य के लिए आशा देते हुए उनके दुःख दर्द बांटने को कहा गया है।

एक दिन मैं कलीसिया के कार्यालय में बैठा हुआ था कि फोन की घंटी बज गई। फोन पर हमारी कलीसिया का एक मैम्बर थी, जिसने बड़ी निराशा भरी आवाज में कहा, ''मुझ से इमरजेंसी रूम में मिलो।'' किसी भयंकर हादसे के बारे में सोचता हुआ मैं अस्पताल चला गया और इमरजेंसी रूम में गया। उसकी अनमोल बेटी का अभी अभी मोटरगाड़ी का ऐक्सिडेंट हुआ था और मैं हर किसी के चेहरे को देखकर बता सकता था कि वह लड़की बची नहीं थी। प्रचारकों से आम तौर पर यह उम्मीद की जाती है कि वे क्या कहेंगे पर कई बार हमारे पास कहने को शब्द नहीं होते। मैं अंदर गया, और मैं कभी भूल नहीं सकता कि उस मां ने मुझसे क्या कहा। आंखों में आंसू भरे वह खड़ी होकर कहने लगी, ''मुझे मालूम था कि आप आएंगे।'' बर्टी वाई. विलियम्स ने लिखा है:

> जब आपको परखने के लिए परेशानी आपके पास आती है
> आप उस मित्र से प्रेम करते हैं जो अभी ''पास खड़ा'' है।
> शायद वह कुछ कर नहीं सकता है –
> जो कर सकते हैं वह आप ही हैं; ...
> पर इतना पता होना ही कि आपका एक मित्र है
> जो अंत तक ''पास खड़ा'' रहेगा,
> जिसकी शांति आपको तसल्ली देती रहेगी,
> जिसकी जोश भरी तालीम आपकी ही है –
> तो किसी न किसी तरह आपको सफल होने में इससे सहायता मिलती है,
> चाहे वह कुछ कर नहीं सकता।
> और इस कारण आप उत्साही मन से पुकार उठते हैं,
> ''परमेश्वर उस मित्र को आशीष दे जो अभी 'साथ खड़ा' है!''[15]

मित्र होने के नाते हमारा काम अपने मित्रों के दुःख दर्द को दूर करने में सहायता करना नहीं है। हमारा काम उनके दुःख को घटाना और उनकी तकलीफ़ को बांटने में सहायता करने के लिए उनके साथ होना है।

सच्चे मित्र दुःख के दौर को समझते हैं और इस कारण अपने परेशान मित्र को उन्हें अपनी बात कहने देते हैं और पूछते हैं कि क्यों। एक मित्र के रूप में दुःख के चरणों को समझना महत्वपूर्ण है और अपने दुःखी मित्रों को इन चरणों में से निकलते रहने की स्वतन्त्रता को समझना आवश्यक है: (1) इनकार, (2) अलगाव, (3) खीझ, (4) सौदेबाजी, (5) निराशा, और फिर (6) स्वीकृति। अय्यूब के पास दुःखी होने, क्रोधित होने और निराश होने के कई कारण थे। बाइबल हमें बताती है कि हम क्रोधित हो सकते हैं पर, पाप न करें (इफिसियों 5:26)। इसके अलावा निराशा वास्तविक है, और यह अनोखी या अस्वाभाविक नहीं है, विशेषकर इन परिस्थितियों में। 1 राजाओं 19 में एलिय्याह निराश हुआ था। 2 कुरिन्थियों 1:8, 9 में पौलुस ने कहा, ''हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम हमारे उस क्लेश से अनजान रहो, जो आसिया में हम पर पड़ा, कि ऐसे भारी बोझ के दब गए थे, जो हमारी सामर्थ से बाहर था, यहां तक कि हम जीवन से भी हाथ धो बैठे थे। वरन हम

ने अपने मन में समझ लिया था, कि हम पर मृत्यु की आज्ञा हो चुकी है कि हम अपना भरोसा न रखें, वरन परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाया है।'' हमारे प्रभु ने भी एक बार कहा था, ''मेरा जी बहुत उदास है यहां तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है'' (मत्ती 26:38)।

अपनी समयसारणी पर जब अय्यूब तैयार था तो उसने अपनी निराशा को अपने मित्रों के साथ साझा किया और यह अच्छी बात है। अय्यूब परेशान था, और वह चाहता था कि उसका दु:ख दूर हो जाए। अपनी गहरी पीड़ा को व्यक्त करने का प्रयास करते हुए उसने इस बात का ज़िक्र किया कि वह चाहता है कि काश वह कभी पैदा ही न हुआ होता (3:3) और फिर उसने चाहा कि मृत्यु आकर उसके सारे दु:ख दर्द को उठा ले (3:20-26)। 3:26 में उसने कहा, ''मुझे न तो चैन, न शान्ति, न विश्राम मिलता है; परन्तु दु:ख ही दु:ख आता है।'' यह व्यक्ति अपनी अत्यधिक पीड़ा को व्यक्त कर रहा था इस अध्याय में अय्यूब ने पांच बार पूछा कि क्यों? (3:11, 12 [दो बार], 20, 23)।

एक नवयुवक के जनाज़े पर नेकनीयत प्रचारक ने जवानों से भरे सभागार में यह कहा, ''कभी यह मत पूछो कि ऐसी त्रासदियां क्यों होती हैं।'' उसने अच्छी नीयत से कहा था पर बाइबल में ऐसे लोगों की भरमार है जिन्होंने पूछा कि क्यों। भजन संहिता 22:1 में दाऊद ने परमेश्वर से पूछा कि उसने उसे दु:खों से छुड़ाया क्यों नहीं। क्रूस पर हमारे प्रभु ने अपने पिता से पूछा, ''तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' अय्यूब का सबसे बड़ा खौफ उस पर था और उसको समझ नहीं आ रहा था कि यह क्यों हो रहा है। किसी के ऊपर जब अय्यूब जैसी परीक्षाएं आती हैं तो यह पूछना स्वभाविक ही है कि ऐसा क्यों। हमारे भाई एक भजन गाया करते हैं, ''परखे जाने और जांचे जाने पर हम अक्सर हैरान होते हैं कि ऐसा *क्यों* ...।'' परमेश्वर ने अय्यूब के ''क्यों'' के प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट नहीं दिया पर पूछने में कोई बुराई नहीं है। भजन में आगे कहा गया है कि ''हम इसे धीरे-धीरे समझ जाएंगे।''[16] सच्चे मित्र अपने परेशान मित्रों को दु:ख के दौर में से गुज़रने और बिना जवाब दिए यह पूछने देते हैं कि ऐसा क्यों? एफ़. मिलस

दु:ख की एक झलक (अध्याय 3)

प्रसिद्ध अंग्रेज़ लेखक सी. एस. लूइस ने 1944 में दु:ख की दार्शनिक सर्वेक्षण के रूप में *द प्रॉब्लम ऑफ़ पेन* लिखी परन्तु उसकी अंतिम पुस्तक *ए ग्रीफऑब्ज़र्वड* उसकी प्रिय पत्नी जॉय की मृत्यु के लगभग एक साल बाद 1961 में छपी। इसमें कैंसर के विध्वंस से किसी जीवन साथी के खोने की पीड़ा का अहसास होता है। उसने परमेश्वर की अनुपस्थिति को बड़ी गहराई से महसूस किया और अपने दु:ख और पीड़ा का वर्णन किया:

> दु:ख आसपास घूमने वाले बमवर्षक की तरह है और जब जब यह चक्कर सिर के ऊपर आता है तब तब यह बम बरसाता है; शारीरिक पीड़ा प्रथम विश्व युद्ध में मोर्चे पर होती रहने वाली गोलाबारी की तरह है, जो बिना रुके कई कई घंटे चलती रहती है। विचार कभी स्थिर नहीं होता, पर दु:ख आम तौर पर स्थिर होता है।[17]

डी. शैकलफोर्ड

निराशा से निपटना (अध्याय 3)

अय्यूब के बच्चे, उसकी सम्पत्ति और उसका स्वास्थ्य छिन गया था। आज टूटे रिश्ते, तलाक, नौकरी छूटना, आर्थिक तंगी, अधूरे सपने, बीमारी और मौत जैसी ऐसी ही बहुत सी समस्याएं हैं, जो हमारे निजी आनन्द और प्रसन्नता के छिनने का कारण बन सकती हैं। अय्यूब ने खुलकर अपनी पीड़ा जता दी, यहां तक कि उसने अपनी यह इच्छा भी बता दी कि काश वह पैदा ही न हुआ होता। फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी। जॉन इ. हार्टले ने लिखा है, ''वह अपने सबसे अंधकारमय समय में भी बच निकला क्योंकि उसने न तो परमेश्वर की निंदा की और न अपने भाग्य को अपने हाथ में लिया।''[18]

मसीही व्यक्ति के लिए भी आत्महत्या कोई विकल्प नहीं है। इसके बजाय वह जीवन के तनावों का सामना करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर रहते हुए उसमें सामर्थ ढूंढ़ता है। विश्वासी व्यक्ति के परीक्षा के दिन प्रार्थनाओं में और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर मनन में डूबे हुए होने चाहिए। इसके अलावा उसको अपने आप से पूछना चाहिए, ''मैं इन परिस्थितियों में परमेश्वर की महिमा कैसे कर सकता हूं ? यदि यीशु ऐसी परिस्थिति में होता तो वह क्या करता ?'' कलीसिया के परिवार के भीतर से दूसरों से प्रोत्साहन भी मांगना चाहिए। यदि आवश्यक हो तो किसी पेशेवर मसीही सलाहकार की मदद भी लेनी चाहिए। डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 71. [2]वेयन जैक्सन, द *बुक ऑफ़ अय्यूब* (एबिलेन, टेक्सस: क्वालिटी पब्लिकेशंस, 1983), 27. [3]आल्डन, 72. [4]वहीं, 73, एन. 8. [5]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, द *हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडि., अनु. और सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:524. [6]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 49; और जेम्स बर्टन ऐंड थेल्मा बी. कॉफमैन, द *बुक ऑफ़ अय्यूब* (एबिलेन, टेक्सस: एसीयू प्रैस, 1993), 43–44. [7]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 1:845. [8]सेमुएल रोल्स ड्राइवर ऐंड जॉर्ज बुचनन ग्रे, *ए क्रिटिकल ऐंड एक्सजेटिकल कॉमैंट्री ऑन* द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द इंटरनेशनल क्रिटिकल कॉमैंट्री (एडिनबर्गः टी. ऐंड टी. क्लार्क, 1921), 36. [9]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 99. [10]जैक्सन, 32.

[11]http://www.brainyquote.com/quotes/authors/t/thomas_fuller_4.html; इंटरनेट; 22 अक्टूबर 2009 को देखा गया। [12]http://www.brainyquote.com/quotes/authors/m/marlene_dietrich.html; इंटरनेट; 22 अक्टूबर 2009 को देखा गया। [13]जेम्स एस. हेवेट, सम्पा., *इलस्ट्रेशन्स अनलिमिटेड* (व्हीटन, इलिनोय: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1988), 119. [14]जोज़फ़ स्वेन, ''हाउ स्वीट, हाउ हेवनली'' *साँग्स ऑफ़ फ़ेथ ऐंड प्रेज़,* संकलन एवं सम्पा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [15]बर्टी वाई. विलियम्स, *हाउस ऑफ़ हैप्पीनेस* (न्यू यॉर्क: जॉर्ज सुली ऐंड कं., 1928), 13. [16]डब्ल्यू. बी. स्टीवंस, ''फ़ादर अलौंग,'' *साँग्स ऑफ़ फ़ेथ ऐंड प्रेज़,* संस्क. व सम्पा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [17]सी. एस. लुईस, *ए ग्रीफ़ ऑब्जर्व्ड* (न्यू यॉर्क: द सीबरी प्रैस, 1961), 34.